2 जुलाई 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अपना होने से क्या होता है ? जबतक अपनापन न हो, तबतक अपने होने का कोई लाभ नहीं मिलता। यहाँ अपने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण अपनापन है।

ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ-49

वर्ष : 32, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ग्रीष्मावकाश में शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में पूरे देश में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। विगत अंक में अलवर एवं बुन्देलखण्ड में लगाये गये ग्रुप शिविरों के साथ-साथ खण्डवा, पिड़ावा, जयपुर, मलकापुर, इन्दौर, द्रोणगिरि एवं तमिलनाडु के बाल संस्कार शिविरों के समाचार प्रकाशित किये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त भिण्ड (म.प्र.), नागपुर और हिंगोली (महा.) में भी ग्रुप शिविर लगाये गये। ग्रुप शिविरों के अतिरिक्त उदयपुर, भोपाल, बैंगलोर, खनियांधाना, जबलपुर, सागर, औरंगाबाद, बिजौलिया आदि स्थानों पर स्थानीय स्तर पर भी बृहद् शिविरों का आयोजन किया गया। जिनके संक्षिप्त समाचार इसप्रकार हैं ह्न

नागपुर (महा.) : यहाँ दिनांक 31 मई से 7 जून 09 तक श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर के तत्त्वावधान में श्री नरेशकुमारजी सिंघई एवं श्री सुदीपकुमारजी जैन परिवार द्वारा आयोजित 12 वॉ संस्कार शिक्षण-शिविर, ग्रुप शिविर एवं श्री महावीर विद्या निकेतन का प्रवेश पात्रता शिविर आयोजित किया गया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष समाजसेवी श्री रामरतन सारडा थे और विशिष्ट अतिथि श्री कृष्णा खोपडे (भूत.अध्यक्ष स्थायी समिति), श्री चंदु मेहर (भूत.नगरसेवक), श्रीमती एन.चंद्रिकापूरे (मुख्याध्यापिका), श्री एन. के. पलसापुरे (आर्किटैक्ट), श्री नंदकिशोर मांगुलकर काटोल, श्री आलोक शास्त्री कारंजा आदि मंचासीन थे। सभा में विद्या निकेतन के प्राचार्य पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी ने विद्या निकेतन संबंधी विस्तृत जानकारी और प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस शिविर की विशेष उपलब्धी यह रही कि **विदर्भ के 25 स्थानों** पर **40 युवा विद्वानों** के सान्निध्य में कुल 1536 बालक एवं 1296 श्रावकों ने अनेक विषयों की परीक्षा देकर प्रमाणपत्र प्राप्त किया। पाळा एवं पांढुर्णा में युवा फैडरेशन शाखा का गठन किया गया। दशलक्षण हेतु यवतमाळ, आर्वी, काटोल, बोरगांव मंजू से आमंत्रण प्राप्त हुये।

ग्रुप शिविर का समापन समारोह नवनिर्मित वीतराग-विज्ञान भवन में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी जैन ने की। मुख्य अतिथि अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन करेली, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन करेली, श्री रजनीशजी जैन, पुरस्कार वितरणकर्त्ता श्री नरेशकुमारजी सिंघई एवं समस्त विद्वत्गण मंचासीन थे। शिविरका संयोजन पण्डित प्रवेशजी शास्त्री एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री ने किया।

ह्न अशोक जैन

दशलक्षण पर्व के संदर्भ में

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास अनेक स्थानों से आमंत्रण-पत्र प्राप्त हो रहे हैं, जिन्होंने अभी तक आमंत्रण नहीं भेजा है, वे कृपया शीघ्र भेजें।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भेजे गये थे, एतदर्थ जिन विद्वानों ने अभी तक अपनी स्वीकृति नहीं भेजी है, वे कृपया शीघ्र भेजें। **ह्न मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

32 वॉ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

हार्दिक आमंत्रण

जयपुर (राज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 32 वॉ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर रविवार, दिनांक 26 जुलाई से मंगलवार, दिनांक 4 अगस्त 2009 तक आयोजित होने जा रहा है।

इस महामांगलिक प्रसंग पर बाबू जुगलकिशोरजी युगल कोटा, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

इस अवसर पर सभी साधर्मियों को पधारने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

नोट - आवासादि की व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

सम्पादकीय - 31

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

'शरीरादीनां स्वभावानुचिन्तनमनुप्रेक्षा। अर्थात् शरीरादिक के स्वभाव का पुनः पुनः चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है।[१]'

'कर्मों की निर्जरा के लिए अस्थि-मज्जानुगत अर्थात् पूर्णरूप से हृदयङ्गम हुए श्रुतज्ञान के परिशीलन करने का नाम अनुप्रेक्षा है।[२]'

'अपना और शरीरादि का जहाँ-जैसा स्वभाव है, वैसा पहिचानकर, भ्रम को मिटाकर, भला जानकर, राग नहीं करना और बुरा जानकर द्वेष नहीं करने रूप सच्ची उदासीनता के लिए यथार्थ अनित्यत्वादिक का चिन्तवन करना ही सच्ची अनुप्रेक्षा है।[३]'

'इन बारह भावनाओं के अभ्यास से जीवों की कषायरूपी अग्नि शान्त हो जाती है, राग गल जाता है, अन्धकार विलीन हो जाता है और हृदय में ज्ञानरूपी दीपक विकसित हो जाता है।[४]'

अनुप्रेक्षाओं का चिन्तवन करने से संसार, शरीर, भोगों से उदासीनभावरूप वैराग्य की उत्पत्ति और वृद्धि होती है। स्वरूप-स्थिरता का पुरुषार्थ और संवरपूर्वक निर्जरा एवं मोक्ष की ओर प्रयाण होता है।

आस्रव भावना में दुःखद आस्रवों का विचार करने से संवर और निर्जरा का सम्यक् पुरुषार्थ जाग्रत होता है।

बोधिदुर्लभ भावना में रत्नत्रय की दुर्लभता का चिन्तन करने से प्राप्त अवसर को न गँवाने की भावना उत्पन्न होती है।

लोक भावना में लोक के स्वरूप तथा उसमें परिभ्रमण के दुःखों का चिन्तन करने से निज चैतन्य लोक में निवास की प्रेरणा मिलती है।

ऐसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति इन वैराग्यवर्द्धिनी भावनाओं के चिन्तन से होती है तथा ये वीतरागता की उपलब्धि में सहायक होती है।

'जो भव्य जीव अनादिकाल से आज तक मोक्ष गये हैं; और जो आगे मुक्त होंगे वे सब इन्हीं भावनाओं का चिन्तवन करके ही हुए हैं और आगे होंगे।[५]'

'जो धर्मध्यान में प्रवृत्ति करता है, उसको ये द्वादशानुप्रेक्षा आधाररूप हैं; अनुप्रेक्षा के बल पर ध्याता धर्मध्यान में स्थिर रहता है।[६]'

अनुप्रेक्षाओं के चिन्तन से संसार, शरीर और भोगों की अशरणता असारता आदि का चिन्तन कर वैराग्य को दृढ़ किया जाता है। यद्यपि मुनिराज की भाव भूमि वैराग्य से भीगी होती है, तथापि उनके जीवन में भी वैराग्य की अत्यधिक अभिवृद्धि हेतु वैराग्यजननी बारह भावनाओं का चिन्तन आवश्यक होता है।

छहढालाकार पण्डित दौलतरामजी के शब्दों में कहें तो ह्न

'मुनि सकलव्रती बड़भागी, भव-भोगन तें वैरागी।
वैराग्य उपावन माई, चिन्तैं अनुप्रेक्षा भाई।।

वे महाव्रतों को धारण करने वाले मुनिराज बड़े भाग्यवान हैं, जो भवभोगों से विरक्त हैं तथा वैराग्य को पुष्ट करने के लिए बारह भावनाओं का चिन्तन करते हैं।'

स्वामी कार्तिकेय के शब्दों में 'भवियजणाणंद जणणीयो' अर्थात् बारह भावनाएँ भव्यजीवों के लिए आनन्दजननी हैं।[१]'

अनुप्रेक्षा को भावना कहने का कारण यह कि ह्न अनुप्रेक्षा का अर्थ होता है बारम्बार चिन्तवन करना। किसी भी विषय की गहराई में जाने के लिए उसके स्वरूप का बारम्बार विचार करना होता है। अतः अनुप्रेक्षा को भावना शब्द से भी कहा जाता है। उक्त अनुप्रेक्षाओं का चिन्तन बारह प्रकार का होने से ये बारह भावना के नाम से प्रसिद्ध है।

अनुप्रेक्षाओं का चिन्तन मात्र मुनिराज ही नहीं, पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक एवं अविरत सम्यग्दृष्टि भी करते हैं।

मुनिराज का जीवन तो वैराग्यमय होता ही है। अतः वे तो सहज वैराग्यरूपी महल के शिखर के शिखामणि होते हैं; उनके जीवन में तो इन भावनाओं का चिन्तन एवं उसका फल प्रगट भी हो ही जाता है, फिर भी वैराग्यभाव की विशेष वृद्धि के लिए वे इनका चिन्तन करते हैं। सम्यग्दृष्टि अथवा श्रावक भी अपने वैराग्यभाव की वृद्धि के लिए इन वैराग्यमय भावनाओं का चिन्तन करते हैं। प्रथमानुयोग के उल्लेख इस बात के साक्षी हैं किसी भी तीर्थंकर गृहस्थदशा का परित्याग कर मुनिधर्म अंगीकार करते हैं, और इन बारह-भावनाओं का चिन्तन करते हैं।

यद्यपि मिथ्यादृष्टि अज्ञानी को भी इनके चिन्तन का निषेध नहीं है, तथापि उसे वस्तुस्वरूप का सम्यक् बोध न होने से, उसके चिन्तन में समीचीनता नहीं होती। वह शरीरादि की अनित्यता, अशरणता आदि के चिन्तन से उनके प्रति समभाव न लाकर देह और भोगों की क्षणभंगुरता से भयभीत होकर दुःखी हो जाते हैं। अतः उसे सर्वप्रथम आगम के आधार पर सत्य वस्तुस्वरूप का निर्णय करना चाहिए।

दूसरी बात यह भी है कि इन बारह भावनाओं का वर्णन संवर के कारणों के अन्तर्गत आया है और मिथ्यादृष्टि को संवर होता नहीं है; अतः उसके सच्ची बारह भावनाएँ नहीं होती हैं। हाँ, वह वस्तुस्वरूप के निर्णय पूर्वक इनके चिन्तन से अपने चित्त में वैराग्यमय कोमल परिणामों के द्वारा आत्मानुभव का पुरुषार्थ करे तो उसके चिन्तन को निष्फल नहीं कहा जा सकता।

'बारह भावनाओं के चिन्तन में भेदविज्ञान भी निहित है। बारह भावनाओं के क्रम में भेदविज्ञान का क्रमिक विकास भी दृष्टिगोचर होता है। यदि आरम्भ की छह भावनाएँ परसंयोगों की अस्थिरता, पृथक्ता एवं मलिनता का सन्देश देकर अनादिकालीन परोन्मुखता समाप्त कर, अन्तरोन्मुख होने के लिए प्रेरित करती हैं तो सातवीं आस्रवभावना संयोगाधीन दृष्टि से उत्पन्न होनेवाली संयोगी विकारों से विरक्ति उत्पन्न करती हैं तथा संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म भावनाएँ उस निज शुद्धात्मतत्व के प्रति समर्पित होने का मार्ग प्रशस्त करती हैं, जिसके आश्रय से रत्नत्रयरूप संवरादि निर्मल पर्यायें उत्पन्न होती हैं।[१]'

अनुप्रेक्षा के पहले सम्यग्दर्शन होना जरूरी है, क्योंकि सम्यग्दर्शन

१. सर्वार्थसिद्धि, ९/७, २. धवला ९/४, १,५५/२६३/९
३. मोक्षमार्गप्रकाशक, २२९ ४. ज्ञानार्णव भावना अधिकार १९२
५. बारस अणुवेक्खा, गाथा ८९, ९० ६. भगवती आराधना, १८७४

१. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा-१ १. बारह भावना : एक अनुशीलन, १५

के बिना सच्ची अनुप्रेक्षा नहीं हो सकती। सम्यग्दृष्टि जीव को ही आत्मस्वभाव के अनुभवपूर्वक वस्तुस्वरूप का यथार्थ निर्णय होता है; इसलिए शरीरादि की अनित्यता, अशरणता अथवा अपवित्रता का चिन्तन उसे समताभाव का उत्पादक होता है एवं आत्मस्वभाव की दृष्टिपूर्वक वैराग्यभावमय वीतरागपरिणति की अभिवृद्धि होती है।

आचार्य पूज्यपाद ने तो यहाँ तक कहा है ह्न 'तत्त्वज्ञान की भावनापूर्वक आत्यन्तिक मोक्षसुख की प्राप्ति होती है।[१]'

'अज्ञानी जीव अनुप्रेक्षा के सम्बन्ध में यह भूल करता है कि वह देह की एवं संयोगों की अनित्यता आदि के चिन्तवन से शरीरादिक को बुरा जान, हितकारी न जानकर उनसे उदास होने को अनुप्रेक्षा कहता है। सो यह तो जैसे कोई मित्र था तब उससे राग था और पश्चात् उसके अवगुण देखकर उदासीन हुआ; उसीप्रकार पहले शरीरादिक से राग था, पश्चात् अनित्यादि अवगुण अवलोककर उदासीन हुआ, परन्तु ऐसी उदासीनता तो द्वेषरूप है।[२]'

अनुप्रेक्षाओं का चिन्तवन सर्वथा शुभभावात्मक ही नहीं है। निश्चयनय से अनुप्रेक्षा शुद्धोपयोग और व्यवहारनय से शुभोपयोगात्मक है। रयणसार गाथा ६४ में ऐसा कहा है ह्न 'बारह अनुप्रेक्षायें बन्ध–मोक्ष के कारण स्वरूप हैं।' तात्पर्य यह है कि व्यवहारनय से अनुप्रेक्षा शुभभावात्मक होने से पुण्यबन्ध की कारण है तथा निश्चयनय से अनुप्रेक्षा शुद्धभावस्वरूप होने से मोक्ष की कारण है।'

समयसार की ३२० गाथा की तात्पर्यवृत्ति टीका में आचार्य जयसेन ने शुद्धोपयोग को भी भावनारूप स्वीकार किया है।

'अनुप्रेक्षा के इन बारह भेदों में यह रहस्य निहित है कि संसारी जीव के मुख्यरूप से स्त्री–पुत्र, मकान–जायदाद, रुपया–पैसा और शरीर आदि का ही संयोग है; इनमें सर्वाधिक नजदीक का संयोगी पदार्थ शरीर है। अनित्यभावना में इनकी अनित्यता, अशरणभावना में इनकी अशरणता तथा संसारभावना में इनकी दुःखरूपता व निःसारता का चिन्तन किया जाता है। स्वयं में एकत्व और संयोगों से भिन्नत्व का विचार क्रमशः एकत्व और अन्यत्वभावना में होता है। संयोगों (शरीर आदि) की मलिनता, अपवित्रता का चिन्तन ही अशुचिभावना है।'

उक्त भावनाओं के चिन्तन का विषय यद्यपि संयोग ही है; तथापि चिन्तन की धारा का स्वरूप इस प्रकार हो कि संयोगों से विरक्ति हो, अनुरक्ति नहीं। अतः ये छह भावनायें मुख्यरूप से वैराग्योत्पादक हैं।

आस्रव, संवर और निर्जरा तो स्पष्टरूप से तत्त्वों के नाम हैं; अतः इनका चिन्तन सहज ही तत्त्वपरक होता है। बोधिदुर्लभ और धर्मभावना में भी रत्नत्रयादि धर्मों की चर्चा होने से इनका चिन्तन भी तत्त्वपरक ही है। लोकभावना में लोक की रचना सम्बन्धी विस्तार को गौण करके यदि उसके स्वरूप पर विचार किया जाये तो उसका चिन्तन भी निश्चितरूप से तत्त्वपरक ही है।

इसप्रकार आरम्भ की छह भावनाएँ वैराग्योत्पादक एवं अन्त की छह भावनाएँ तत्त्वपरक हैं; परन्तु इसे नियम के रूप में देखना ठीक न होगा; क्योंकि यह कथन मुख्यता और गौणता की अपेक्षा से ही है।

१. सर्वार्थसिद्धि, ९/७/८०३ २. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ २२९

वैराग्योत्पादक चिन्तन से भावभूमि तरल हो जाने पर, उसमें बोया हुआ तत्त्वचिन्तन का बीज निरर्थक नहीं जाता; उगता है, बढ़ता है, फलता भी है और अन्त में पूर्णता को भी प्राप्त होता है। कठोर–शुष्क भूमि में बोया गया बीज नाश को ही प्राप्त होता है, अतः बीज बोने के पहले जमीन को जोतने एवं सींचने के श्रम को निरर्थक नहीं माना जा सकता। आरम्भ की छह भावनाएँ मुख्यरूप से भावभूमि को जोतने एवं वैराग्यरस से सींचने का ही काम करती हैं; जो कि आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि बारह भावनाओं की यह चिन्तनप्रक्रिया अपने आप में अद्भुत है, आश्चर्यकारी है; क्योंकि इनमें संसार, शरीर और भोगों में लिप्त जगत को अनन्तसुखकारी मार्ग में प्रतिष्ठित करने का सम्यक् प्रयोग है, सफल प्रयोग है।[१]'

स्वभाव की नित्यता के चिन्तनपूर्वक, पर्याय को गौण करके नित्य द्रव्यस्वभाव का अनुभव या स्वसंवेदन करना ही संवर के कारणरूप अनित्यानुप्रेक्षा है। नित्यता अथवा अनित्यता का चिन्तन तो विकल्पात्मक शुभभावरूप होने से पुण्यबन्ध का ही कारण है।

यद्यपि अनित्य आदि अनुप्रेक्षाओं का विकल्पात्मक चिन्तन शुभभावरूप होने से पुण्यबन्ध का कारण है तथापि तत्त्वार्थसूत्र में इन अनुप्रेक्षाओं का वर्णन जो संवर के कारणों में किया गया है, उसका कारण यह है कि ह्न शुभभावरूप विकल्पात्मक चिन्तन होता है। उसी समय मुनिराज के तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप शुद्धपरिणति अथवा इस चिन्तन के अभावपूर्वक शुद्धोपयोग होता है, वस्तुतः वही वास्तविक अनुप्रेक्षा है और वह संवर का कारण है।

जिस प्रकार अभ्यन्तर वीतरागपरिणति को निश्चयमोक्षमार्ग एवं उस भूमिका में वर्तनेवाले शुभराग को व्यवहारमोक्षमार्ग कहा जाता है; उसी प्रकार अनुप्रेक्षा के सन्दर्भ में भी समझ लेना चाहिए। इस सन्दर्भ में मोक्षमार्गप्रकाशक में समागत निम्न कथन का सदैव स्मरण रखना चाहिए ह्न 'बहुत क्या, इतना समझ लेना कि निश्चयधर्म तो वीतरागभाव है, अन्य नाना विशेष बाह्यसाधन की अपेक्षा उपचार से किये हैं, उनको व्यवहारमात्र धर्मसंज्ञा जानना।[२]'

शुद्धनिश्चयनय से आत्मा का स्वरूप सदैव इस तरह चिन्तवन करना चाहिए कि ह्न 'यह आत्मा देव, असुर, मनुष्य और राजा आदि के विकल्पों से रहित है अर्थात् शुद्धात्मा में देवादिक भेद नहीं हैं, ज्ञानस्वरूप मात्र है और सदा स्थिर रहनेवाला है।[३]'

अभी समय हो गया है। अगले प्रवचन में इन्हें ही विस्तार से कहेंगे।

ॐ नमः।

आज के प्रवचन ने श्रोताओं को झकझोर दिया था, उनके हृदयों को हिला दिया था। बारह भावनाओं के स्वरूप और चिन्तन प्रक्रिया को श्रोताओं ने इस दृष्टिकोण से पहली बार ही सुना था। अभी तक बारह भावनायें रोते–रोते उदास मन से ही पढ़ी–सुनी जाती थीं। 'इन चिन्तन समसुख जागे' यह भी पढ़ते तो थे, पर वह समसुख' क्या है? इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

सभी श्रोता अगले प्रवचन की उत्सुकता मन में संजोये अपने–अपने घर को प्रस्थान कर गये। ●

१. बारह भावना : एक अनुशीलन, ६–७
२. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ–२३३ ३. बारस अणुवेक्खा, गाथा–७

देश के कोने-कोने में संस्कार शिविरों की धूम

1. जबलपुर (म.प्र.) : श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, बडा फुहारा, जबलपुर में श्री वीतराग–विज्ञान मण्डल एवं श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला द्वारा दिनांक 14 जून से 25 जून 2009 तक तृतीय बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस धार्मिक शिक्षण शिविर में 6 वर्ष से 19 वर्ष की आयु के लगभग 200 प्रतिभागियों ने सम्मिलित होकर धार्मिक व नैतिक शिक्षा ग्रहण की।

इस शिविर में बच्चों को प्रतिदिन पूजन प्रशिक्षण, भक्तामर स्तोत्र एवं अहिंसा पाठमाला के माध्यम से अध्यापन कराया गया।

शिविर में पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बडामलहरा एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर ने विविध वर्ग की कक्षाओं का संचालन किया।

अंतिम दिन परीक्षा ली गई। भक्तामर की कक्षा में प्रथम स्थान कु. श्रद्धा जैन एवं बालकक्षा में प्रथम स्थान कु. आशी जैन ने प्राप्त किया। शिविर में श्रेष्ठ शिविरार्थी के रूप में कु. नंदिनी जैन को चुना गया। सभी पुरस्कार मुख्यअतिथि के रूप में पधारे सहायक विक्रयकर आयुक्त श्री टी. के. वेद एवं उनकी माताजी श्रीमती रुक्मणी देवी द्वारा प्रदान किये गये। सभा की अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन ने की। अंत में मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

2. खनियांधाना (म.प्र.) : श्री नंदीश्वर विद्यापीठ, चेतनबाग के तत्त्वावधान एवं श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली के आयोजकत्व में रविवार, दिनांक 14 जून से शनिवार, 20 जून 2009 तक श्री समयसार कलश मण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ।

शिविर में डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना, पण्डित शीतलजी नौगांव, पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर, ब्र. अमितजी विदिशा, पण्डित सचिनजी अकलूज एवं स्थानीय शास्त्री विद्वानों का लाभ समाज को मिला।

शिविर में प्रात: डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के तथा सायंकाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर बालिकाओं एवं महिलाओं की विशेष कक्षायें ब्र. नीलम बहन खनियांधाना ने ली।

इस अवसर पर वज्रसेन जैन, दीपक जैन दिल्ली की ओर से विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को स्कूल बैग तथा श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के द्वारा टिफीन एवं कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षा में श्रेष्ठ रहे विद्यार्थियों को सम्मेद शिखरजी की वंदना के लिये नि:शुल्क ले जाने व वहाँ स्वर्ण पदक से सम्मानित करने की घोषणा की।

3. बैंगलोर (कर्ना.) : यहाँ दिनांक 3 मई से 10 मई 2009 तक कन्नड धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. हेमन्तभाई गांधी के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा श्री आनंदकुमारजी जैन, श्रीमती धवलजी, पण्डित अनन्तराजजी शास्त्री मण्डया और स्थानीय विद्वान अनेकान्तजी शास्त्री, बैंगलोर के भी प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

आयोजन में 300 बच्चें व 150 श्रावक–श्राविकाओं ने शिविर का लाभ लिया। शिविर संयोजक श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित अनन्तराजजी शास्त्री थे।

4. भोपाल : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा चौक के तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई से 8 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 320 शिविरार्थियों का नामांकन हुआ।

इस अवसर पर बाल ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के दोनों समय 47 शक्तियों पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान जयपुर, पण्डित शशांकजी शास्त्री जयपुर, पण्डित किशनमलजी कोलारस, श्रीमती वर्षा जैन जयपुर एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा बाल, शिशु एवं किशोर वर्ग की कक्षायें ली गईं।

शिविर के उद्घाटन के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में म.प्र. फैडरेशन के प्रदेशाध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या का सान्निध्य मिला।

अंतिम दिन परीक्षा लेकर विशेष योग्यता प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन की शाखा का गठन भी किया गया। **ह्न अनिल जैन, अध्यक्ष**

5. उदयपुर : यहाँ दिनांक 28 मई से 5 जून 2009 तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं शिविर का आयोजन श्री सुजानमलजी गदिया परिवार की ओर से किया गया। प्रथम दिन 28 मई को अनेक बग्गियों सहित विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज के प्रवचनसार के आधार से मुनि के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये।

प्रतिदिन कार्यक्रम में आने–जाने के लिये उदयपुर शहर के आस–पास की कॉलोनियों से नि:शुल्क बसों की व्यवस्था थी।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री बांसवाड़ा ने सम्पन्न कराये।

विधान के प्रारंभ एवं अंतिम दिन श्री भागचन्दजी कालिका परिवार की ओर से सभी को मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थसूत्र) भेंट स्वरूप प्रदान किये गये।

6. परकोटा (सागर) : यहाँ श्री महावीर जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई से 11 जून 2009 तक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रतिदिन सामूहिक पूजन, कक्षा, प्रवचन एवं रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रतिदिन करीब 100 बच्चों ने तत्त्वज्ञान के संस्कार ग्रहण किए।

इस कार्यक्रम में ब्र. नन्हेलालजी मोकलपुर, पण्डित शंशाकजी शास्त्री सागर, कु. वंदना जैन, कु. दीपाली जैन, कु. महिमा जैन आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। ब्र. कल्पना बेन ने भी इस अवसर पर अपना अमूल्य समय देकर सभी को धर्मलाभ दिया।

अन्तिम दिन प्रात: भव्य प्रभात फेरी शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई श्री महावीर जिनालय पहुँची, जिसमें बच्चों एवं बड़ों ने उत्साह से भाग लिया। रात्रि में सामूहिक भक्ति एवं सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहनार्थ पारितोषिक वितरित किये गये, जिसमें पण्डित निर्मलकुमारजी, श्री सुनीलकुमारजी सराफ, श्री संतोषकुमारजी नीमवाले, श्री अतुलजी सतभैया, श्री प्रशमजी भंडारी आदि उपस्थित थे।

Teerthanker Mahaveer University

(Established under U. P. Act No. 30 of 2008, Degrees recognised by U.G.C.)

Delhi Road, Moradabad (146Kms. from Delhi on NH.24)

Fax: 0591-2360777, 2360444, 2487444, E-mail: admission@tmu.ac.in

Admission Notice Session 2009-10

Programme	Eligibility	Duration	Contact Numbers
M. B. B. S.*	10+2 with 50% marks in P.C.B.	5½ yrs	Mr. Abhishek Kapoor 09410010555, 09756861516
M.Sc. Medical • Anatomy • Physiology • Biochemistry • Pharmacology • Microbiology	MBBS, BDS, BUMS, BHMS, BAMS, B.Sc. (Nurs.), BMLT, B. Pharma., B.P.T. & B.Sc. (Bio)	3 yrs	Mr. Rajesh Verma 09837848861, 09458079812
B.D.S.* Bachelor of Dental Surgery	10+2 with 50% marks in P.C.B.	5yrs	Mr. S. P. Jain 09411635611, 09756861514
Diploma in Dental Mechanic	10+2 with science subjects.	2 yrs	
Diploma in Dental Hygienist	10+2 with science subjects.	2 yrs	
M. Pharm. • Pharmaceutics • Pharmacology • Pharmaceutical Chemistry • Pharmacognosy	B. Pharm.	2yrs	Mr. Anup Singh 09457635832, 09458079814
B. Pharm.	10+2 with any science stream.	4yrs	
M.Sc. Nursing • Medical Surgical • Child Health • Psy. Nursing • Maternity • Community Health & Mental Health	B.Sc. Nursing with 1 year experience.	2 yrs	Ms. Nazia Parveen 09457635824, 09457187093
Post B.Sc. Nursing	10+2 with GNM.	2yrs	
B.Sc. Nursing	10+2 with Science subjects.	4 yrs	
G.N.M. Diploma in General Nursing & Midwifery	10+2 in any stream.	3½ yrs	
M. Tech.- Information & Communication Tech. **M. Tech.**- C.S. **M. Tech.**- I.T.	B. Tech./ MCA/ MSc. In relevant field.	2yrs	Mr. R. K. Dwivedi 09012561060, 09012561061, 09410613372
M. Tech.- Information & Communication Tech. **M. Tech.**- C.S. **M. Tech.**- I.T. (On weekend basis for working professionals)	B. Tech./ MCA/ M.Sc. In relevant Field.	3yrs	
B.Tech.- Civil **B.Tech.**- Mech. **B.Tech.**- Electrical **B.Tech.**- I.T. **B.Tech.**- Electrical & Electronics **B.Tech.**- E.C. **B.Tech.**- C.S.	10+2 with P.C.M. or computer science.	4 yrs	
B. Tech. IInd Yr Lateral Entry	B.Sc. (Math) or 3 yrs diploma.	3 yrs	
Integrated B.Tech. with M.B.A. (Dual Degree)	10+2 with P.C.M. or computer science.	5 yrs	
M.C.A. Master of Computer Applications	Graduation in any stream with mathematics at 10+2 level or BCA.	3 yrs	
B.C.A. Bachelor of Computer Applications	10+2 with mathematics at 10th level.	3 Yrs	
B. Sc. (Hons.) Mathematics	10+2 with Math as a subject	3 yrs	
B. Sc. (Hons.) Electronics	10+2 with P.C.M. or computer science.	3 yrs	
M.B.A.- Gen. **M.B.A.**- Finance **M.B.A.**- Mkt. **M.B.A.**- HR **M.B.A.**- Retail Management **M.B.A.**- International Business	Graduation in any stream.	2yrs	Mr. M. P. Singh 09756861517, 09412553031, 09457635823
M.B.A. (On weekend basis for working professionals)	Graduation in any stream.	2 yrs	
M.H.A. Master of Hospital Administration	Graduation in any stream.	2 yrs	
B.B.A. Bachelor of Business Administration	10+2 in any stream.	3 yrs	
B. Com (Hons.)	10+2 in any stream.	3 yrs	
B. Com.	10+2 in any stream.	3 yrs	
B. A. (Hons.) English	10+2 with English as a subject	3 yrs	
B. A. (Hons.) Economics	10+2 in any stream.	3 yrs	
M.S.W. Master of Social Work	Graduation in any stream.	2 yrs	Dr. Vandana Verma 09410613371
B.Sc. (Home Science)	10+2 in any stream.	3 yrs	
M.Ed.	B. Ed. with 55% marks.	1 year	Dr. G. K. Upadhyay 09412866444, 09458079813
B.Ed.	Graduation in any stream with 45%	1 year	
P.G.D.T.M. PG Diploma in Tourism Management	Graduation in any stream.	1 year	Mr. Ratan Sahu 09457187092, 09457650841
B.H.M. Bachelor in Hotel Management	10+2 in any stream.	4 yrs	

Ph.D. in different fields: Contact- 09837016031

*Admission will start only after renewal permission from G.O.I.

An Ultimate Destination for World-Class Education

Our student Mr. Nilesh Singh topped (Gold Medalist) all the 466 colleges of the U.P.T.U in MCA course (2005-2008).

University symbolises the Pan-India culture where presently students from 21 states study in different courses.

University ensures absolutely ragging free environment

• World class infrastructure • University Campus spread over 110 acres of land at N.H.-24 with Twenty lacs sq. Ft. constructed area. • Air cooled hostel rooms with attached toilet and bath • World class Auditorium • Hi-tech labs • Focus on personality development programs including Multi-Lingual, Music & Yoga Classes • Indoor & outdoor games facility supported with National Level Stadium at University Campus • 550 bedded Hospital.

Certified ORACLE (WDP)Member

Sunday Open

Admission on priority basis with scholarship up to 10% on tuition fee for Jain students and for other students securing more than 90% marks in qualifying exam.

• Admission forms are available at the University office on payment of Rs. 500/- in cash • For obtaining by post send D.D. of Rs. 600/- in favour of **"Teerthanker Mahaveer University"** payable at Moradabad • Form can also be downloaded from the university website: ***www.tmu.ac.in*** and is to be accompanied with D.D. of Rs. 500/-.

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 31
सातवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एक मदारी था, जो गांव-गांव में, चौराहे-चौराहे पर बंदर को नचा-नचाकर लोगों का मनोरंजन किया करता था। एक दिन एक गांव के बाजार में एक दुकान के सामने उसने अपनी डुग-डुगी बजाना शुरू की तो बन्दर का खेल देखने के लिए बच्चों की भीड़ इकट्ठी होने लगी।

दुकानदार सेठ ने आकर कहा ह्न ''चलो, हटो यहाँ से; हमारी दुकान के सामने तुम यह मजमा नहीं लगा सकते।''

मदारी ने हाथ जोड़कर कहा ह्न ''बस, आधा घंटे का काम है, दिखा लेने दो बंदर का खेल। किराये के रूप में तुम्हारे बच्चे और तुम खेल को मुफ्त में देख लेना।''

पर सेठ नहीं माना और बार-बार कहने लगा ह्न ''हटो यहाँ से, वरना....''

उसका यह रुख देखकर मदारी बोला ह्न ''सुनो सेठजी, हमने तो यह काम चुना है सो अब हमें तो जिन्दगी भर डुग-डुगी ही बजाना है, बन्दर का खेल ही दिखाना है; यहाँ न सही, तो दूसरी जगह, इस गांव में नहीं तो दूसरे गांव में। भारत में सात लाख गांव हैं। इसलिए हमारी यह डुग-डुगी तो बजेगी ही, बंद होनेवाली नहीं है। सोच लो सेठजी, तुम और तुम्हारे बच्चे ही खेल देखे बिना रह जायेंगे।''

इसीप्रकार हमारा भी यही कहना है कि हमने तो वीतरागी तत्त्वज्ञान का डंका बजाने का कार्य अपनाया है, सो अब तो यह डंका जिन्दगी भर बजाना ही है; इस गांव में न सही तो दूसरे गांव में, उसमें भी नहीं तो तीसरे गांव में। भारत में सात लाख गांव हैं और भी सारी दुनिया पड़ी है। अत: हमारा काम तो रुकनेवाला नहीं है। हमारी डुग-डुगी तो बजनेवाली ही है, हमारी तूती तो बोलनेवाली ही है। अब आप अपनी सोचिये।

यदि आपने विरोधभाव रखा, विरोध किया तो आप ही इस वीतरागी तत्त्वज्ञान से वंचित रह जावेंगे, आपका मनुष्य भव व्यर्थ के कामों में और अनर्गल भोगों में चला जायेगा। उसके बाद न जाने चार गति और चौरासी लाख योनियों में कहाँ-कहाँ घूमना होगा ? इसलिए हमारा कहना तो यही है कि आप भी हमारी बात पर ध्यान दें, व्यर्थ के विवाद से कोई लाभ नहीं है। इसके बारे में सोचा है कभी आपने ? यदि नहीं तो जरा सोचिये, गंभीरता से विचार कीजिये, अन्यथा यह भव यों ही चला जावेगा।

अरे, भाई ! गृहीत मिथ्यात्व का यह निरूपण पण्डित टोडरमलजी ने जान की बाजी लगाकर किया है। उन्होंने किसी के विरुद्ध कुछ नहीं किया, कुछ नहीं कहा, कुछ नहीं लिखा; उन्होंने तो यह महान कार्य भूले-भटके लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए किया था, मिथ्यात्व के महापाप से बचाने के लिए किया था। और उनका यह प्रयास अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि उनके मोक्षमार्ग प्रकाशक ने विगत २५० वर्षों से अभीतक लाखों लोगों को सन्मार्ग पर लगाया है, लाखों लोगों का गृहीत मिथ्यात्व छुड़ाया है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी का जीवन भी समयसार और मोक्षमार्गप्रकाशक पढकर ही बदला था। हम भी उन लोगों में हैं, जिन्होंने मोक्षमार्गप्रकाशक से बहुत कुछ सीखा है।

उनके इस उपकार को, उनके बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता। हमें भी आज यही काम करना है और उसी हिम्मत के साथ करना है, सावधानी से करना है, विनम्रता के साथ करना है, आलोचना-प्रत्यालोचना से दूर रहकर करना है। जो निधि हमें व आपको प्राप्त हुई है; उसका भरपूर लाभ लेना है और उसे जन-जन तक पहुँचाना है।

गृहीत मिथ्यात्व का निरूपण करते हुए सबसे पहले इस पाँचवें अधिकार में जैनेतर मतों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है; जिसमें उन्होंने उन सभी मतों की समीक्षा की है; जो तत्कालीन समाज में प्रचलित थे।

जैनदर्शन के न्याय ग्रंथों में जो कुछ उपलब्ध होता है, यदि उसे सरल- सुबोध भाषा में एक साथ एक स्थान पर देखना हो तो मोक्षमार्गप्रकाशक का पाँचवाँ अधिकार पढ लीजिए।

जो कुछ जैन न्याय ग्रंथों में उपलब्ध होता है, वह सबकुछ तो इसमें है ही; उसके अतिरिक्त उस समय प्रचलित मुस्लिम मत आदि की समीक्षा भी की गई है।

एक जमाना यह था कि जब भारतीय दर्शनों में परस्पर वाद-विवाद हुआ करते थे। उस समय का समाज सहिष्णु समाज था और वह उसमें बढ़-चढ़ कर भाग लेता था। दोनों पक्षों की बात गंभीरता से सुनी जाती थी और गुण-दोषों के आधार पर निर्णय होते थे। ये वाद-विवाद राज-दरबार में हुआ करते थे और न्यायप्रिय राजागण स्वयं उक्त सभा के अध्यक्ष रहा करते थे। आज से लगभग उन्नीस सौ वर्ष पहले इसप्रकार के वाद-विवादों के माध्यम से जैन न्याय के प्रतिष्ठापक आचार्य समन्तभद्र ने सारे देश में घूम-घूम कर जैनदर्शन की बहुत प्रभावना की थी।

करहाटक नगर के राजा ने जब उनसे उनका परिचय पूछा तो उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा था कि ह्न

(शार्दूलविक्रीडित)

पूर्वं पाटिलपुत्र मध्यनगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालवसिन्धु टुक्क विषये काञ्चीपुरे वैदिशे।
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहुभटं विद्योत्कटं संकटं
वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूलविक्रीडितम्॥

हे राजन् ! सबसे पहले मैंने पाटलिपुत्र (पटना) नगर में शास्त्रार्थ (वाद-विवाद) के लिए भेरी बजाई; उसके बाद मालव, सिन्धु, ढक्क, कांची, विदिशा आदि स्थानों पर जाकर भेरी बजाई और अब बड़े-बड़े दिग्गज विद्वानों से परिपूर्ण इस करहाटक नगर में आया हूँ। मैं वादार्थी हूँ और सिंह के समान सर्वत्र ही निर्भय होकर विचरण करता हूँ।

आचार्य समन्तभद्र के उक्त कथन से न केवल उनकी विद्वता की महिमा हमारे ध्यान में आती है; अपितु उस समय के सहिष्णु समाज का स्वरूप भी हमारे ध्यान में आता है।

उस काल में सभी दर्शनों में स्वमत मंडन और परमत खंडन संबंधी

विपुल साहित्य की रचना हुई है। जैनदर्शन भी उससे अछूता नहीं रहा। जैनदर्शन में 'न्यायशास्त्र' नाम से प्रसिद्ध जितना भी साहित्य है; लगभग वह सभी इसीप्रकार का है।

पण्डित टोडरमलजी ने न केवल उक्त साहित्य का गहराई से अध्ययन किया था, अपितु जैनेतर साहित्य का भी भरपूर आलोढ़न किया था।

तत्कालीन विसंगतियों से भी वे भलीभांति परिचित थे। इस बात के प्रमाण उनके इस मोक्षमार्गप्रकाशक के पाँचवें अधिकार में यत्र–तत्र देखे जा सकते हैं।

जिस समय मोक्षमार्गप्रकाशक लिखा जा रहा था, उस समय परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल गई थीं। समाज में पहले जैसी सहिष्णुता नहीं रही थी और सात्विक वाद–विवाद, वितंडावाद का रूप ले चुके थे। साहित्य के क्षेत्र में भी इसका असर देखा जा सकता था। इसकारण उस समय इसप्रकार का समीक्षात्मक साहित्य लिखना खतरे से खाली नहीं रह गया था।

उक्त परिस्थितियों से पण्डित टोडरमलजी भलीभाँति परिचित थे। फिर भी उन्होंने हम–तुम जैसे लोगों के उपकार के लिये जान की बाजी लगाकर यह काम किया।

यह लिखते समय उनके चित्त में अनेक विकल्प खड़े हुए थे, जिनकी झलक उनके निम्नांकित कथनों में देखी जा सकती है ह्न

''तथा वह कहते हैं कि ह्न यह तो सच है; परन्तु अन्यमत की निन्दा करने से अन्यमती दु:खी होंगे, विरोध उत्पन्न होगा; इसलिए निन्दा किसलिए करें ?

वहाँ कहते हैं कि ह्न हम कषाय से निन्दा करें व औरों को दु:ख उपजायें तो हम पापी ही हैं; परन्तु अन्यमत के श्रद्धानादि से जीवों के अतत्त्वश्रद्धान दृढ़ हो, जिससे संसार में जीव दु:खी होंगे; इसलिए करुणा भाव से यथार्थ निरूपण किया है। कोई बिना दोष दु:ख पाता हो, विरोध उत्पन्न करे तो हम क्या करें ?

जैसे ह्न मदिरा की निन्दा करने से कलाल दु:खी हो, कुशील की निन्दा करने से वेश्यादिक दु:ख पायें और खोटा–खरा पहिचानने की परीक्षा बतलाने से ठग दु:खी हो तो हम क्या करें ?

इसीप्रकार यदि पापियों के भय से धर्मोपदेश न दें तो जीवों का भला कैसे होगा ? ऐसा तो कोई उपदेश है नहीं, जिससे सभी चैन पावें ?

तथा वे विरोध उत्पन्न करते हैं; सो विरोध तो परस्पर करे तो होता है; परन्तु हम लड़ेंगे नहीं, वे आप ही उपशांत हो जायेंगे। हमें तो अपने परिणामों का फल होगा।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि उन्होंने विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में शान्त रहने के संकल्प के साथ अत्यन्त करुणा भाव से इस प्रकरण पर कलम चलाई थी। फिर भी वे विरोधियों के षड्यंत्र के शिकार हो गये।

उस समय के बाद से परिस्थितियाँ तेजी से बदलती गईं और वाद–विवाद मात्र स्कूल–कॉलेजों में होनेवाली वाद–विवाद प्रतियोगिताओं तक सीमित होकर रह गये हैं। आज इसप्रकार के साहित्य का लेखन भी देखने में नहीं आता।

प्राचीनकाल में विभिन्न दर्शनों में मूलभूत अन्तर क्या है ? ह्न इस बात की खोज की जाती थी और उनकी प्रामाणिकता पर पूरी गंभीरता से विचार किया जाता था; पर आजकल विभिन्न दर्शनों में क्या अन्तर है ह्न इसकी चर्चा न करके, उनमें क्या समानता है ह्न यह खोजा जाने लगा है; क्योंकि आज मानस यह बन गया है कि विभिन्न दर्शनों में अन्तर है, इसकी चर्चा करने से देश व समाज की एकता खण्डित होती है और उन दर्शनों में से किसकी कितनी बात तर्क की कसौटी पर खरी उतरती है और कितनी नहीं; इसकी चर्चा मात्र से वातावरण विषाक्त हो जाता है।

अत: आजकल के विश्वधर्म सम्मेलनों में तो यही चर्चा होती है कि लगभग सभी दर्शन समान ही हैं।

अब स्वमतमंडन और परमतखण्डन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अब तो **अहो रूपं, अहो ध्वनि** का जमाना आ गया है।

हाँ, विश्वविद्यालयों में अभी भी यही पढ़ाया जाता है कि विभिन्न दर्शनों में परस्पर अन्तर क्या है? परीक्षाओं में प्रश्न भी इसीप्रकार के आते हैं कि जैनदर्शन और बौद्धदर्शन में मूलभूत अन्तर क्या है?

यद्यपि यह सत्य है कि अन्तर की चर्चा से वातावरण विक्षुब्ध होता है; तथापि विक्षुब्धता का मूल कारण सहिष्णुता का अभाव है, दार्शनिक चर्चा नहीं। अत: समाज को सहिष्णु बनाने का प्रयास होना चाहिये। सभी समान हैं ह्न ऐसा कहने से तो विभिन्न दर्शनों की पहिचान ही समाप्त हो जायेगी। यह किसी देश या समाज के लिये गौरव की बात नहीं है। इसमें सत्य की खोज का रास्ता ही बन्द हो जाने का खतरा है।

यदि सभी समान हैं तो फिर उक्त दर्शनों में परस्पर विरुद्ध कथन क्यों पाये जाते हैं ? कहा गया है कि ह्न

कपिलो यदि सर्वज्ञ: बुद्धो नेति का प्रमा?
बुद्धो यदि सर्वज्ञ: कपिलो नेति का प्रमा ?
तावुभौ यदि सर्वज्ञौ मतभेद: कथं तयो:।।

यदि कपिल सर्वज्ञ हैं तो इस बात के क्या प्रमाण हैं कि बुद्ध सर्वज्ञ नहीं हैं। इसीप्रकार बुद्ध यदि सर्वज्ञ हैं तो इस बात के क्या प्रमाण हैं कि कपिल सर्वज्ञ नहीं है। यदि वे दोनों ही सर्वज्ञ हैं तो उन दोनों में मतभेद क्यों है ? इसीप्रकार यह भी कहा जा सकता है कि यदि सभी दर्शन समान हैं तो फिर ये दर्शन अनेक क्यों हैं ?

यद्यपि यह हो सकता है कि कुछ दर्शनों में कतिपय बातों में समानता हो, पर कुछ बातों की समानता के आधार पर उन्हें एक नहीं माना जा सकता। जितने भी ईश्वरवादी दर्शन हैं, उनमें ईश्वर को मानने संबंधी समानता तो होगी ही; पर अन्य बातों में जमीन–आसमान का अन्तर हो सकता है। इसीप्रकार जैन, बौद्ध और चार्वाक अनीश्वरवादी दर्शन हैं; पर उनमें भी अनेक बातों में महान अन्तर है। बौद्ध क्षणिकवादी हैं, पर जैन कथंचित् क्षणिक और कथंचित् नित्य माननेवाले होने से स्याद्वादी हैं। चार्वाक भोगवादी है, पर जैनदर्शन त्याग में भरोसा रखता है। **(क्रमश:)**

2 जुलाई 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

प्रतिमा विराजमान

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 25 जून को दिगम्बर जैन मंदिर आदर्श नगर गायरियावास में 1008 भगवान आदिनाथ की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान की गई।

मंदिर के मंत्री श्री दीपचन्दजी गांधी ने बताया कि प्रतिमा भरतकुमार नरेशकुमार जैन बावलवाडा द्वारा भेंट की गई।

इस अवसर पर शांतिविधान का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण विधि-विधान डॉ. महावीरप्रसादजी जैन, पण्डित खेमचन्दजी जैन एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। विधान के पश्चात् श्री आदिनाथ शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें घोडे एवं बग्गियों पर आचार्य कुन्दकुन्द एवं गुरुदेवश्री के फोटो सहित धर्मध्वज एवं जिनवाणी लेकर श्री वाडीलाल जैन, श्री नेमीचन्दजी जैन परिवार कोटा एवं श्री टीकमचन्दजी लिखमावत परिवार चल रहा था।

विशाल शोभायात्रा में फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री, मंदिर के अध्यक्ष कन्हैयालालजी दलावत, संरक्षक भागचन्दजी कालिका, सुजानमलजी गदिया, गणेशलालजी, कचरुलालजी मेहता, कस्तूरचंदजी सिंघवी, लक्ष्मीचन्दजी भोरावत, भरत एम.संगावत, हितेशजी गांधी, अशोकजी गदिया आदि के साथ-साथ सैंकड़ों पुरुष कुर्त्ता-पायजामे एवं महिलायें केसरिया वस्त्रों में भजन बोलती हुई चल रही थीं।**ह्न दीपचन्द गांधी**

फैडरेशन शाखा का पुनर्गठन

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 जून को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन किया गया।

सर्वसम्मति से डॉ. राजेश जैन को फैडरेशन का अध्यक्ष चुना गया। अन्य पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष - डॉ. प्रकाशचन्द जैन, सचिव - श्री चैतन्य शास्त्री, सह-सचिव - श्री नितेश जैन, कोषाध्यक्ष - श्री आशीष जैन, शाखा सचेतक - सिंघई महेन्द्र जैन, शाखा प्रबंधक - के.सी. शास्त्री एवं विवेक जैन, प्रचार प्रसार मंत्री - श्री पंकज शास्त्री, संगठन मंत्री - श्री अशोक जैन एवं श्री अनुभव जैन, सांस्कृतिक मंत्री - श्री भानु शास्त्री एवं स्वतंत्र जैन, शिक्षा मंत्री - श्री मनोज शास्त्री एवं सोहिल जैन को चुना गया। शाखा के परामर्शदाता के रूप में श्री राजेन्द्र शास्त्री को चुना गया।

महिला फैडरेशन की अध्यक्ष - श्रीमती सरोज जैन, उपाध्यक्ष - श्रीमती प्रेमबाई जैन, सचिव - कु. अर्पणा जैन, सह सचिव - कु. निधि जैन एवं श्रीमती प्रीति जैन, कोषाध्यक्ष - कु. अर्चना जैन, संगठन मंत्री - श्रीमती अर्चना जैन एवं सपना जैन, शाखा सचेतक - कु. सुनीता जैन एवं आरती जैन, प्रचार प्रसार मंत्री - श्रीमती चम्पा जैन एवं कु. शिल्पी जैन, सांस्कृति मंत्री - कु. कविता जैन एवं कु शालिनी जैन, शिक्षा मंत्री - कु. अभिलाषा जैन, शाखा प्रबंधक - श्रीमती रतिबाई एवं श्रीमती ताराबाई।

शाखा की परामर्शदाता के रूप में श्रीमती सुन्दरबाई एवं श्रीमती रूपरानी को चुना गया। **ह्न मनोज शास्त्री**

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ह्न

राज. प्रदेश का द्वितीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण 12 जुलाई को

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश का एक दिवसीय द्वितीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर दिनांक 12 जुलाई को अकलंक पब्लिक स्कूल, जैन गली, रामपुरा कोटा में आयोजित होने जा रहा है।

शिविर में मुख्यवक्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल होंगे। साथ ही राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री कार्यकर्त्ताओं को संगठन संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

कार्यक्रम के मुख्यअतिथि श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा होंगे।

आयोजन में राजस्थान प्रदेश फैडरेशन की सभी शाखाओं के अध्यक्ष, मंत्री एवं पदाधिकारियों से सपत्नीक पधारने का विशेष आग्रह है।

ह्न जिनेन्द्र शास्त्री, प्रदेशप्रभारी

श्रुत पंचमी पर्व सम्पन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय वयोवृद्ध विद्वानों, शास्त्री विद्वानों, मंगलार्थी विद्वानों एवं समाज के मुमुक्षुओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल के छोटे-बड़े 51 सदस्यों ने अपनी रुचि एवं योग्यतानुसार एक वर्ष के लिये किसी भी एक ग्रन्थ का आद्योपान्त स्वाध्याय करने का नियम लिया।

इसमें विशेषता यह रहेगी कि प्रत्येक साधर्मी अपने स्वाध्याय में आई विशेष बात को नोट करेंगे, जिसे प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को युवा एवं महिला फैडरेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा चैक किया जायेगा। जिसकी नोट बुक में स्वाध्याय के अनुसार विशेष बिन्दुओं का व्यवस्थित लेखन होगा, उसे पुरस्कृत किया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि इसके लिये फैडरेशन सदस्यों ने सभी को नोट बुक उपलब्ध कराई। **ह्न मनीष कहान**

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127